जैनेन्द्र का व्यक्तित्व

मिलन सिन्हा–शोधार्थी एंव डा• पूनम कुमारी –शोध–निर्देशिका

हिन्दी उपन्यास जगत में जैनेन्द्र का अभिर्भाव अत्यन्त उल्लेखनीय घटना हैं। इनकी चेष्टा बाह्य परिवेश से अधिक आत्मोन्मुखता की ओर दृष्टिगत होती है। जैनेन्द्र ने जीवन से अधिक उसमें निहित सत्य की ओर दृष्टिपात किया है। उन्होनें मानव –चेतना के रहस्यों को अपनी अनुभूति की पीठिका पर अभिव्यंजित किया हैं।

जैनेन्द्र का जन्म 2 जनवरी1905 ई • को उतर –प्रदेश के अलीगढ़ जिला अर्न्तगत कौडियागंज नामक गाँव में हुआ था। पिता प्यारेलाल इनके बाल अवस्था में हीं गुजर गये । उनकी माँ रमा देवी और मामा भगवानदीन अपनी देख रेख में प्रारंभिक शिक्षा हेतु ब्रहमचर्य विघालय हस्तिनापुर भेंजा । इनके बचपन का नाम आनंदी लाल था जो आगे चलकर जैनेन्द्र के नाम से प्रसिद्व हुए । गुरूकुल में हीं इनकी प्रारम्भिक शिक्षा हुई, , जहाँ का वातावरण धार्मिक था और इसका प्रभाव उनके रचनाओं पर भी पड़ा । जैनेन्द्र विश्वविघालय की पढ़ाई छोड़ असहयोग आन्दोलन में कूद पड़ें, तथा कई बार कारागार भी गए ।

जैनेन्द्र एक सीधे –सादे व्यक्ति थे। उनकी शान्त , प्रसन्न मुद्रा सदा मुस्कराती रहती थी । उनका व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिभा का पूँजीभूत रूप था । जीवन के प्रति उनमें एक अपूर्व निष्ठा एंव लगन थी। यही कारण है कि उनका व्यक्तित्व अपूर्व और अद्वितीय था । मनोवैज्ञानिक कथा, कहानी ,उपन्यास, नाटक, बाल कथाएँ , ललित निबंध , रोडियो, नाटक आदि के द्वारा उनकी साहित्य सेवा अविस्मरणीय है ।

जैनेन्द्र ने अपनी रचनाओं में जो बौद्विकता रखी है और जीवन की परम्परागत नैतिक मान्यताओं पर जो प्रश्नसूचक चिन्ह लगाया है वह उन्हें हिन्दी कथा साहित्य में एक नये युग –प्रवर्तक के रूप में, प्रेमचन्द से एक कदम आगे स्थापित करता है । जैनेन्द्र के साहित्य में मनोविज्ञान तथा दर्शन का सामंस्य स्पष्टतः दृष्टिगत होता है । वे साहित्यकार होने के साथ– साथ दार्शनिक भी हैं। एक ओर मनोविज्ञान द्वारा डन्होनें मानव–वृति के सत्यों का उद्घाटन किया है , तो दूसरी ओर दर्शन द्वारा आत्मगत सात्यों की अभिव्यक्ति की है और व्यक्ति को आत्ममन्यन की ओर उन्मुख किया है । दार्शनिकता के कारण जैनेन्द्र का साहित्य अत्याधिक गूढ़ हो गया है ,जो उसका सार है । इनके साहित्य का सत्य आत्म –विसर्जन तथा एक्यानुभूति में निहित हैं । उनके अनुसार धर्म समाज अर्थ इत्यादि व्यक्ति की सापेक्षता में ही सार्थक है। उनका सम्पूर्ण साहित्य उनकी आस्तिकता से अनुप्ररिाात है । उनकी ईश्वरीय आस्था जीवन को सम्बल प्रदान करती है । ,

इस प्रकार जैनेन्द्र का साहित्य अध्यात्म तथा भौतिकता का सामुच्चय है । उनके अनुसार जीवन की सार्थकता उसके भोग में हैं, तिरस्कार में नही । जैनेन्द्र की धार्मिक दृष्टि अहिंसामूलक है, जो गाँधी जी से प्रभावित है। इन्होने अहं से मुक्ति को ही सच्ची मुक्ति बताया है । इनके अनुसार भाग्य का विषय अतर्क्य है और पुरूषार्थ का अर्थ केवल श्रम करना ही नहीं है, वरन श्रम के साथ ही ईश्वर के सहयोग को भी स्वीकार करना आवश्यक है। केवल पुरूषार्थ को अपनााने से व्यक्ति में अहं भावना आती है ।

जैनेन्द्र के पूर्ववत साहित्यकारों ने सत्य की अभिव्यक्ति का साहस ही नहीं किया था, किन्तु जैनेन्द्र ने सर्वप्रथम मानव – आत्मा में निहित सत्य कों स्पष्ट रूप से व्यक्त करने का प्रयास किया है।

जैनेन्द्र ने व्यक्ति को उसकी समग्रता में स्वीकार किया है। सृष्टि के मूल स्तम्भ स्त्री –पुरूष की समस्या को उठाकर जैनेन्द्र ने साहित्य जगत में एक नवीन किन्तु शाश्वत सत्य का उद्घाटन किया है । इनके साहित्य में अभिव्यक्त काम–भावना फ्रायड़ की मनोविश्लेषणात्मक दृष्टि से पृथक हैं।

जैनेन्द्र के कथा साहित्य में आत्मोत्सर्ग की भावना इतने व्यापक रूप में अभिव्यक्त हुई कि इनका साहित्य अपने आत्म – विसर्जन का एक मात्र साधन प्रतीत होने लगता है । उनके अनुसार जीवन एक संघर्ष है। संसार युद्व स्थल है । मनुष्य प्रतिक्षराा अपने भाग्य और परिस्थिति को झेलते हुए भी अपनी जीवन गाथा को पूर्ण करने का प्रयास करता है । इन्होनें प्रेम और वेदना को जीवन का आधार माना है। जैनेन्द्र आत्मपरक आस्तिक साहित्यकार और जीवन द्रष्टा हैं । कभी –कभी मन में प्रश्न

उठता है, वास्तव में जैनेन्द्र दार्शनिक है या लेखक ? किन्तु इस प्रश्न को लेकर वाद– विवाद करना निराधार है। वे इन सबसे परे एक व्यक्ति हैं, जिन्होंने मानव जीवन के शाश्वत सत्यों कों उनसे व्यावहारिक धरातल पर समझने का प्रयास किया हैं। जैनेन्द्र जी ने साहित्य को एक नवीन स्वर ही नहीं प्रदान किया , वरन उनके प्रवेश से साहित्य जगत में एक क्रातिकारी प्रभाव की स्थिति उत्पन्न हो गई और समस्त हिन्दी कथा –साहित्य ने एक नवीन करवट ली ।

प्रेमचंद ने जैनेन्द्र के मनोवैज्ञानिक चित्रण पर मुग्ध होकर "हंस" में लिखा था कि– "इनमें अन्तः प्रेरणा और दार्शनिक संकोच का संघर्ष है। उन्होनें हिन्दी उपन्यास साहित्य को नई दिशा प्रदान की । उपन्यास को समाजिक यथार्थ ही नहीं बल्कि मनौवैज्ञानिक यथार्थ के क्षेत्र में प्रवेश करने की राह सुझाई । उन्होनें व्यक्ति की विलुप्त होती पहचान को उभार कर सामने रखा ।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि हिन्दी उपन्यास विधा को प्रेंमचंद्र के बाद जैनेन्द्र ने नया मोड़ दिया । उनके उपन्यासों में फ्रायड की प्रमुख छाप स्पष्ट है । आत्मपीड़ा की अधिकता के कारण कुछ लोगों का कहना है कि जैनेन्द्र हिन्दी में शरतचंद्र की भूभिका का निर्वाह करते है।प्रेमचंद के अन्तर जैनेन्द्र साहित्य जगत में एक नवीन प्रयोग के रूप में अवतरित हुए हैं। उनका साहित्य कालखण्ड और साहित्य स्वानुभव की भूभिका पर आधारित हैं। इनके समस्त साहित्य में मानव हित सोचकर ही किसी मत या आदर्श को ग्रहण किया गया है इनके जीवनदर्शन पर गॉधीवादी अहिंसात्मक नीति का स्पष्ट दिखाई देते हैं। वे किसी धर्म एंव सम्प्रदाय से पूर्णतः बॅधे हुए नहीं है, हॅालाकि उनके साहित्य पर जैन धर्म का प्रभाव दिखाई पडता है।

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि जैनेन्द्र साहित्य क्षेत्र में एक नवीन मोड़ लेकर प्रविष्ट हुए और वह नवीनता सहज है, सयास नहीं। श्रेय और प्रेम में समन्वय सत्य पर आस्था, नारी की उदातता आदि के प्रति संलग्नता भी जैनेन्द्र के साहित्य में निहित है । सब मिलाकर जैनेन्द्र ने जीवन को उसके सम्पूर्ण परिप्रेक्ष्य में देखने की चेष्टा की है ।

संदर्भ सूचि –

जैनेन्द्र का जीवन दर्शन

कुमार जैनेन्द्र व्यतीत (1954)

कुमार जैनेन्द्र दशार्क (1985)

कुमार जैनेन्द्र जयवर्धन

अध्यक्ष–हिन्दी विभाग

एस•बी कॉलेज

आरा